



सम्राट और पतंग

जेन, चित्र: एड, हिंदी: विदूषक

राजकुमारी छुटकी, सम्राट की सबसे छोटी बेटी थी. वो सम्राट के लिए कोई खास माईने नहीं रखती थी. लोग उसके बारे में बहुत कम ही सोचते थे. इसलिए वो पूरे दिन अपनी पतंग से खेलती रहती थी. पतंग - कागज़ और बांस की खपच्चियों की बनी थी.

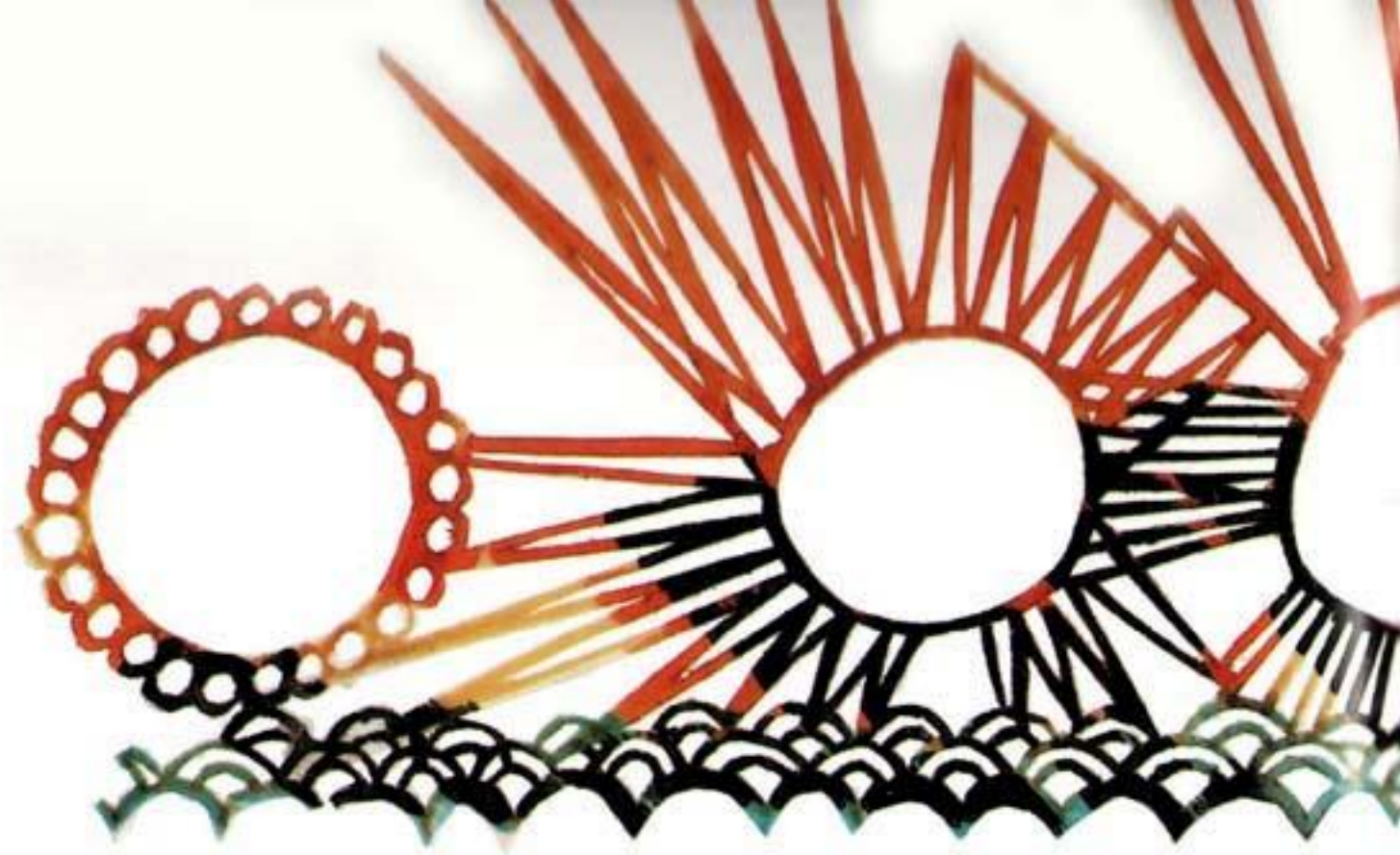
पर जब सम्राट को, गद्दार बागियों ने गिरफ्तार करके एक ऊंची मीनार में कैद किया तो छुटकी ने अपने पिता को मुक्त कराया. बड़े सब्र और होशियारी से उसने अपने बालों और बेलों से एक मोटी रस्सी बुनी और उसे पतंग की मदद से अपने पिता तक पहुंचाया और उन्हें कैद से मुक्त कराया.

एड के रंगीन चित्र बेहद लुभावने हैं. वे परंपरागत पेपर-कट तकनीक से बनाए गए हैं. मशहूर लेखिका **जेन** ने कहानी को बड़े प्यार से लिखा है. इस कहानी में आपको प्राचीन चीन में चित्र बनाने की एक नायाब तकनीक की झलकी भी देखने को मिलेगी. कहानी, प्रेम और वफादारी के बारे में है.



प्राचीन चीन में एक राजकुमारी रहती थी जो सम्राट की चौथी बेटी थी. राजकुमारी इतनी छोटी थी कि उसे लोग छुटकी बुलाते थे. क्योंकि वो इतनी छोटी थी इसलिए कोई उसकी परवाह नहीं करता था और न ही कोई उसपर ध्यान देता था.





उसके सभी भाई उम्र और डीलडौल में उससे बड़े और ताकतवर थे. सभी लोग उनके बारे में ही सोचते थे. सम्राट की आँखों में वे चारों भाई, उगते हुए सूरज थे. चारों भाई राज्य व्यवस्था बनाए रखने में सम्राट की मदद करते थे और लोगों को शांति का सबक सिखाते थे.







छुटकी की तीनों बहनें भी उससे उम्र में बड़ी थी. वो कद-काठी में उससे कहीं ज्यादा मज़बूत थीं. पिता की आँखों में वे तीनों बहनें, मध्यरात्रि के चाँद जैसी थीं. तीनों बहनें मिलकर पिता के लिए मेज़ पर खाना लाती थीं.

छुटकी अपने पिता की आँखों में, सिर्फ एक छोटा तारा थी. छुटकी, पिता के लिए मेज़ पर एक चावल की कनी तक नहीं ला सकती थी. लोग उसे कमज़ोर और नालायक समझते थे. यहाँ तक कि सम्राट यह तक भूल गये थे कि उनकी एक चौथी बेटी भी थी!

इसलिए छुटकी अकेले ही खाना खाती थी. वो खुद से बात करती थी.



वो अकेले खुद से खेलती थी. किसी भी बच्चे के लिए इतना अकेलापन बहुत दुखदाई हो सकता है.

उसे सबसे पसंद थी उसकी पतंग - जो कागज़ और बांस की खपच्चियों की बनी थी.

हर सुबह सूरज उगने के बाद जब पूरब से हवा चलती तो छुटकी अपनी पतंग उड़ाती. और हर शाम जब सूरज ढलता और हवा पश्चिम में सूरज के पास बहती तो उस समय भी छुटकी अपनी पतंग उड़ाती. उसकी पतंग आसमान में एक फूल जैसी नज़र आती. पतंग हवा में एक प्रार्थना जैसे थिरकती.

एक सन्यासी रोज महल के सामने से गुज़रता था. उसने छुटकी की पतंग के ऊपर एक कविता लिखी:

मेरी पतंग ऊपर उठती है

और आसमान की सैर करती है.

मेरी आत्मा अब पंखों पर सवार है.

पर वो एक सन्यासी था. इस तरह के विचार उसके दिमाग में आना ठीक भी थे. जहाँ तक राजकुमारी छुटकी का सवाल था, वो रोज़ सन्यासी का, उसकी कविता के लिए शुक्रिया अदा करती थी. उसके बाद वो दुबारा पतंग उड़ाने में मगन हो जाती थी.

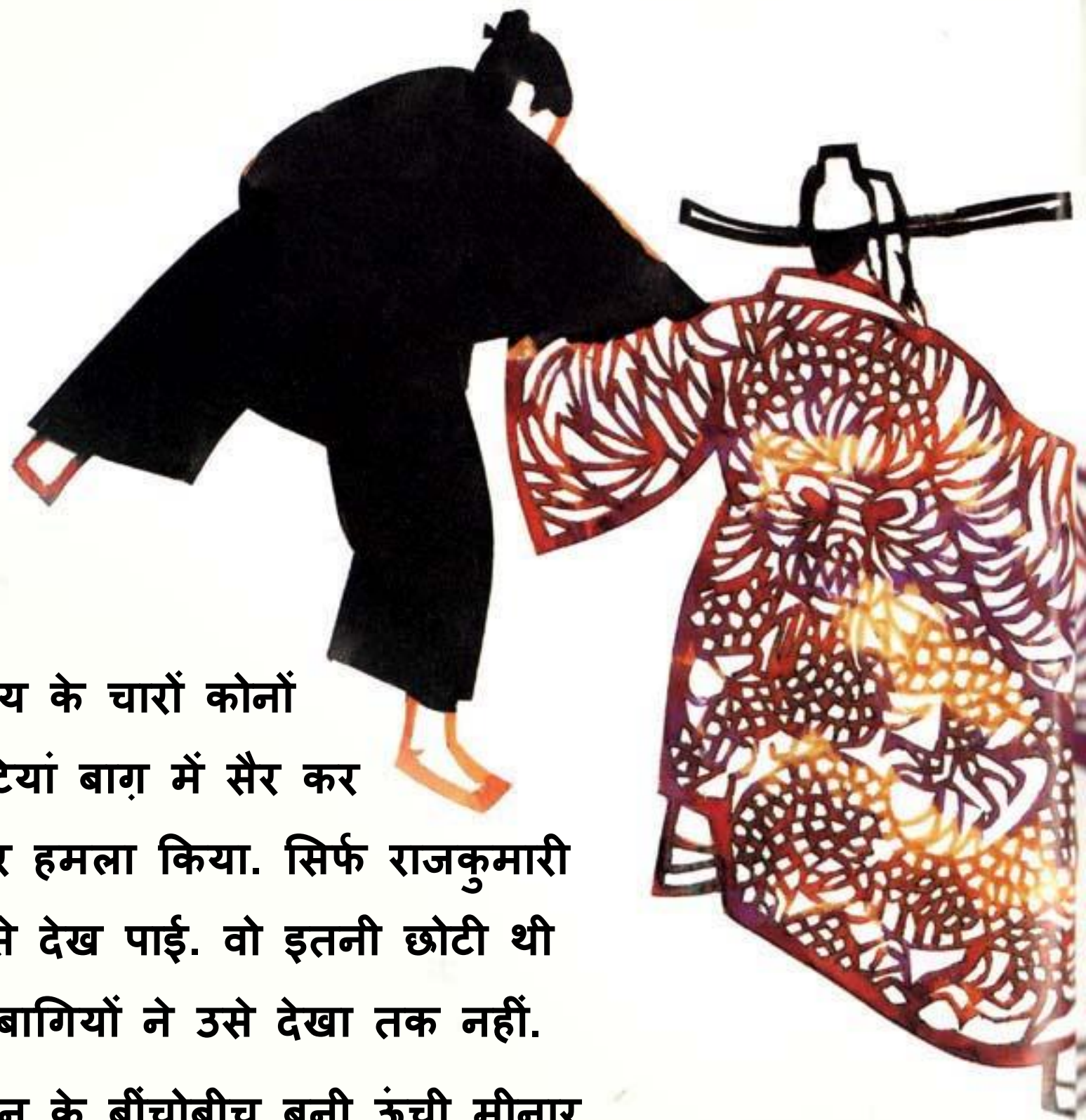


पर सम्राट के राज्य में एकदम शांति नहीं थी. हवा भी शांत नहीं होती. तेज़ हवा अक्सर तालाब के शांत पानी को उकसाती है और उसके ऊपर लहरें बनाती है. उसी तरह कुछ दुष्ट लोग सम्राट के खिलाफ बगावत की सोच रहे थे.

एक दिन जब सम्राट के चारों बेटे राज्य के चारों कोनों में व्यवस्था बनाने गए थे और चारों बेटियां बाग़ में सैर कर रही थीं तब उन दुष्ट लोगों ने सम्राट पर हमला किया. सिर्फ़ राजकुमारी छुटकी ही पूरी घटना को अपनी आँखों से देख पाई. वो इतनी छोटी थी और एक कोने में बैठी थी इसलिए उन बागियों ने उसे देखा तक नहीं.

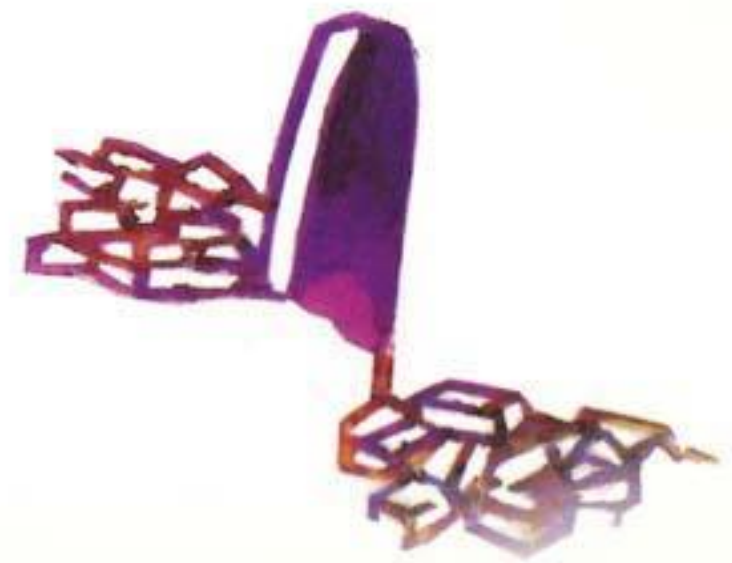
दुष्ट बागी, सम्राट को एक सपाट मैदान के बीचोबीच बनी ऊंची मीनार में ले गए. उस मीनार में ऊपर सिर्फ़ एक खिड़की थी, जिसके बीच में लोहे की एक सलाख लगी थी. सम्राट को अन्दर छोड़ने के बाद बागियों ने मीनार के दरवाज़े को ईंट और गारे से पुख्ता तौर पर हमेशा के लिए सीलबंद कर दिया.

फिर बागी महल में घोड़ों पर वापिस आए और उन्होंने सम्राट की मृत्यु की घोषणा की.



जब सम्राट के बेटों-बेटियों ने यह खबर सुनी तो वे डर के मारे अपनी सुरक्षा के लिए पड़ोस के राज्य में भागे और वहां रोते-सिसकते रहे. रोने और दुःख प्रगट करने के आलावा उन्होंने और कुछ भी नहीं किया.

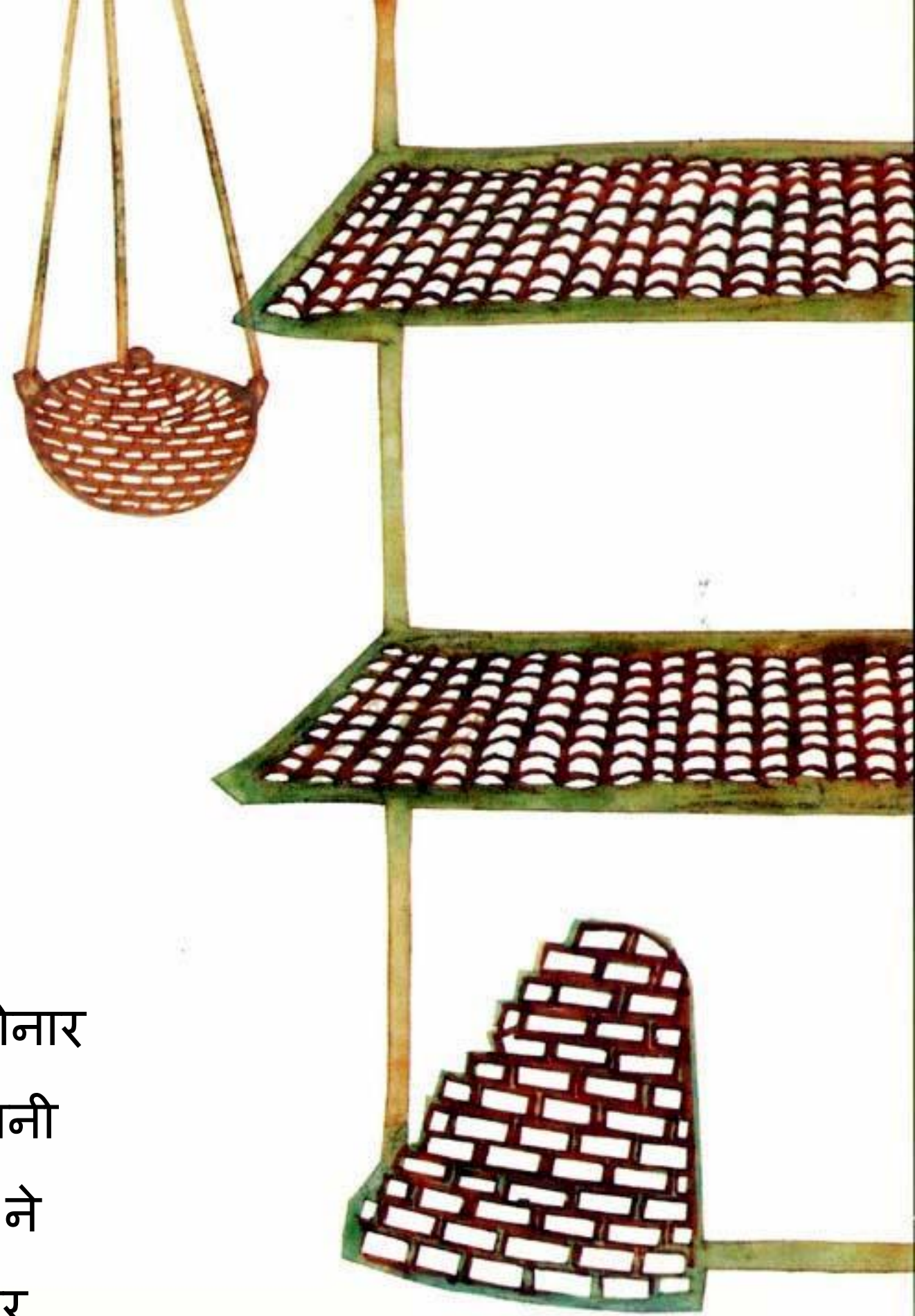
सिर्फ छुटकी राजकुमारी को छोड़ कर. वो इतनी छोटी थी कि उन क्रूर बागियों ने उसे देखा तक नहीं. वो धीरे-धीरे उस सपाट मैदान के पास गई जहाँ मीनार खड़ी थी. वहीं पर छुटकी राजकुमारी ने अपने लिए, पेड़ों की टहनियों और घास-फूस की एक झोपड़ी बनाई.

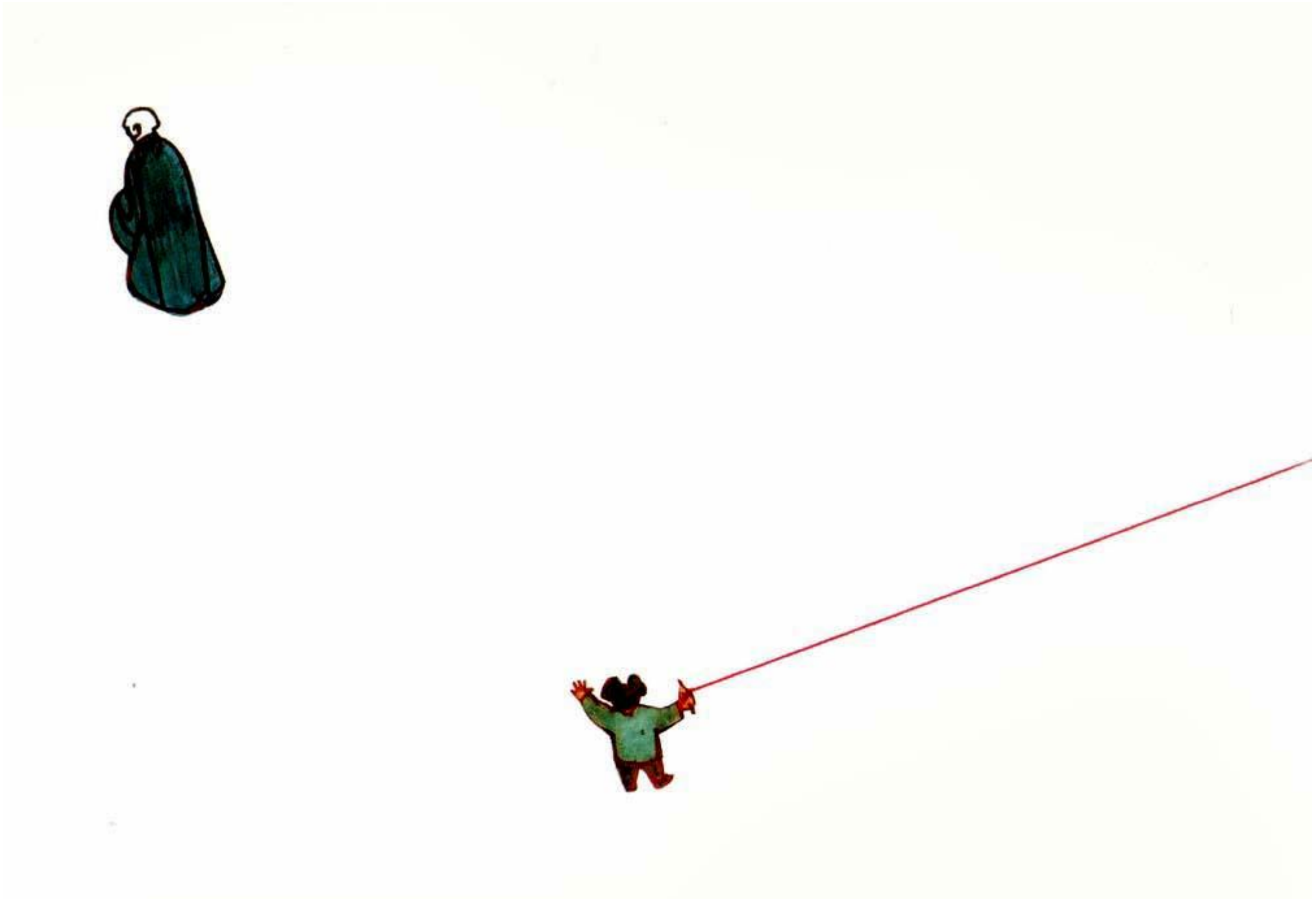


छुटकी राजकुमारी हर रोज़, सुबह-शाम मैदान पार करके मीनार के पास जाती. वहां पर वो अपनी पतंग उड़ाती. पतंग से वो एक खाने की टोकरी लटकाती जिसमें चावल, पोस्ते के केक, सिंघाड़े और ग्रीन-टी होती. पतंग, टोकरी को ऊंचा-और-ऊंचा उठाती और उसे मीनार की खिड़की के पास ले जाती. इस तरह छुटकी राजकुमारी ने अपने पिता – सम्राट को खाना पहुंचाकर जीवित रखा.



इस तरह बहुत दिन बीते. सम्राट, मीनार
में कैद रहे और छुटकी राजकुमारी अपनी
छोटी झोपड़ी में रही. बदमाश बागियों ने
बड़ी क्रूरता से देश पर राज्य किया और
उन्होंने लोगों को बहुत सताया - लोगों को
बहुत दुखी और परेशान किया.





एक दिन जब छुटकी राजकुमारी अपने पिता के लिए भोजन की टोकरी तैयार कर रही थी तब वही बूढ़ा सन्यासी उसकी झोपड़ी के सामने से गुज़रा. छुटकी राजकुमारी उसे देखकर मुस्कुराई. पर सन्यासी ने उसकी तरफ देखा तक नहीं. पर चलते-चलते सन्यासी ज़ोर से यह गीत दोहरा रहा था :

मेरी पतंग हवा में ऊपर उड़े
वो ऊंचे स्वर्ग तक पहुंचे.
जिससे सम्राट पंखों पर उड़ें.

छुटकी राजकुमारी ने सन्यासी का शुक्रिया अदा करने की सोची. पर फिर वो रुकी. उसे गीत कुछ अलग लगा. इस बार उसके शब्द कुछ अलग थे. “रुको!” उसने सन्यासी को पुकारा. पर तब तक सन्यासी वहां से आगे जा चुका था. आखिरकार वो एक सन्यासी था और उसे सांसारिक चीजों से कुछ खास लेना-देना नहीं था.

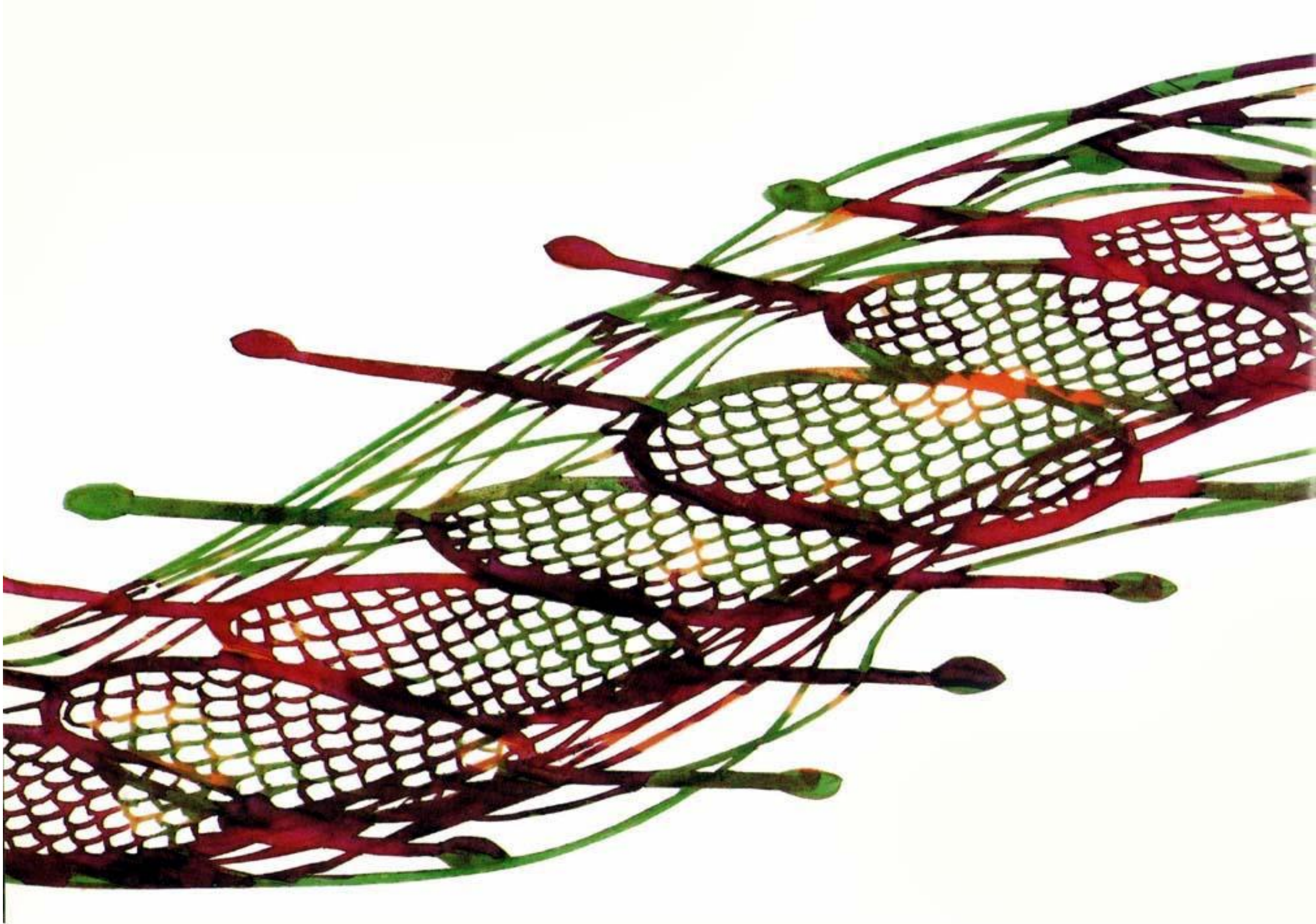
तब छुटकी राजकुमारी को एहसास हुआ कि सन्यासी ने उसे गीत के ज़रिए कोई ज़रूरी सन्देश पहुँचाया था. तब जाकर उसे सन्यासी की बात समझ में आई.



उसके बाद छुटकी राजकुमारी अपने पिता के लिए खाने की तैयारी के साथ-साथ एक काम और करती. वो अपने दोनों छोटे हाथों से घास, बेलों और अपने बालों से, एक रस्सी बुनती.



जब रस्सी राजकुमारी की कलाई जितनी मोटी और मीनार जितनी ऊंची हुई तब जाकर छुटकी राजकुमारी का काम पूरा हुआ. फिर उसने रस्सी को पतंग से बाँधा और मैदान पार करके मीनार के पास पहुंची. वहां पहुंचकर उसने अपने पिता को पुकारा. पर छुटकी राजकुमारी की आवाज़ बहुत धीमी थी. तेज़ हवा में, मालूम नहीं उसकी आवाज़ कहाँ खो गई.

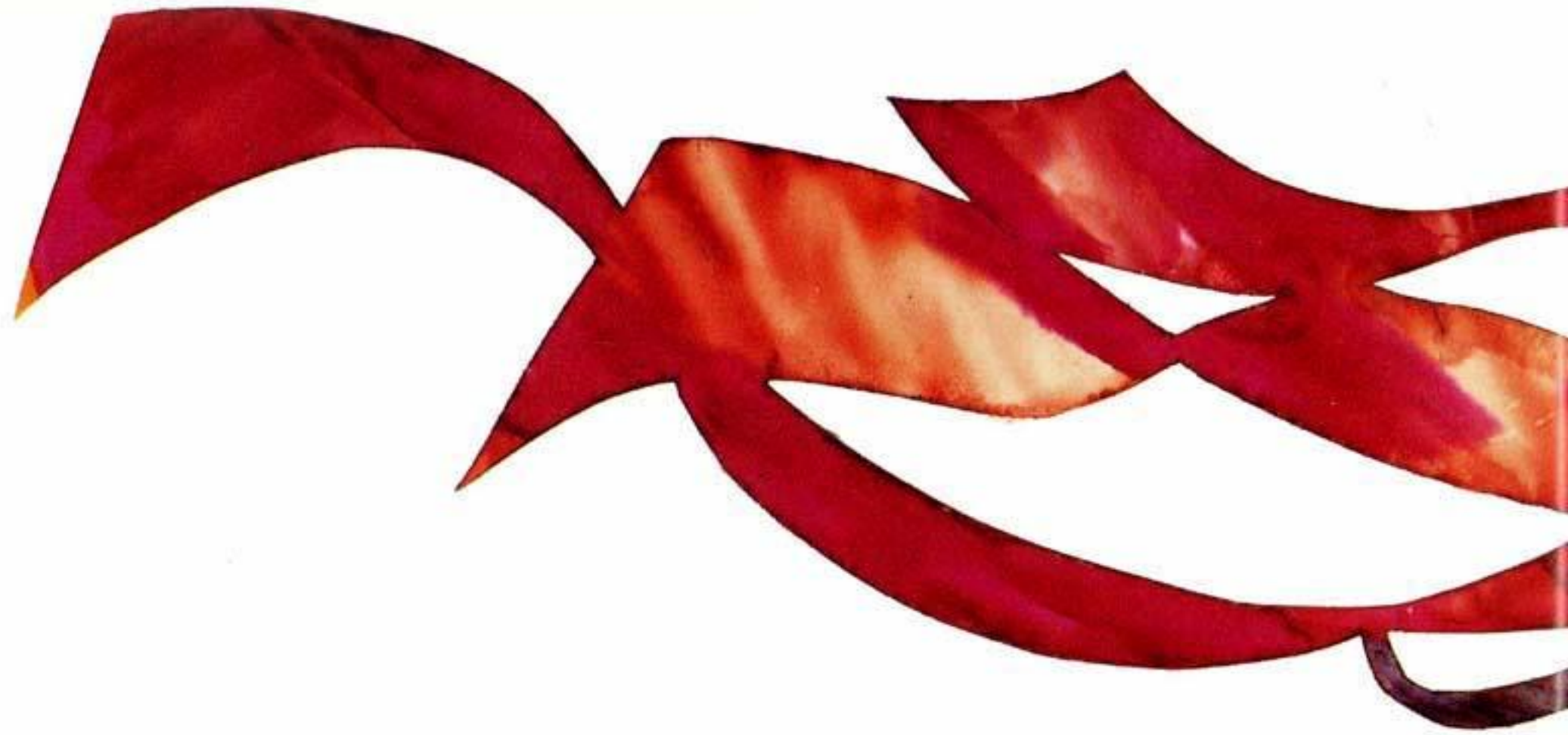




कुछ देर बाद सम्राट ने खिड़की के बाहर झाँका. उन्होंने अपनी छोटी बेटी को, पतंग उड़ाते हुए देखा. सम्राट ने सोचा कि आज भी रोज़ की तरह पतंग, उनके लिए खाने की टोकरी लाएगी. पर आज टोकरी की बजाए पतंग से एक मोटी रस्सी लटकी थी जो घास, बेलों और काले बालों की बनी थी. बाहर बहुत तेज़ हवा चल रही थी जो पतंग का भार संभाले थी.

नीचे ज़मीन पर छुटकी राजकुमारी खड़ी थी. वो रस्सी के दूसरे छोर को पकड़े थी.

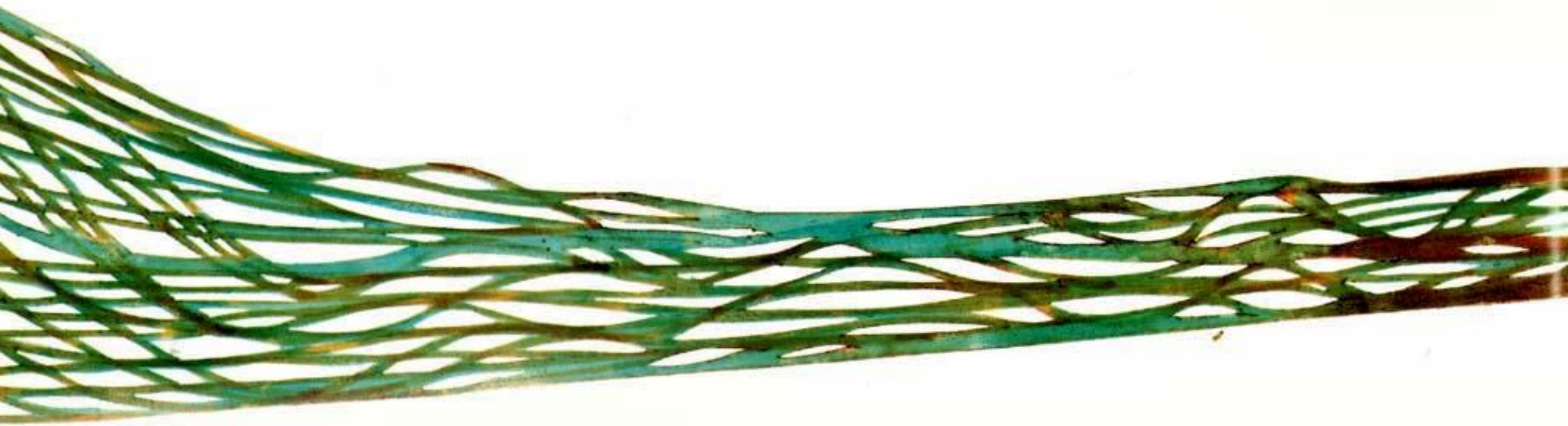
वैसे सम्राट को अपनी सबसे छोटी बेटी की औकाद आज तक समझ में नहीं आई थी, पर आज वो छुटकी राजकुमारी की असलियत को अच्छी तरह समझे थे. सम्राट ने खुद से वादा किया कि अगर राजकुमारी की योजना सफल रही तो आगे से वो अपनी बेटी की हर इच्छा पूरा करेंगे, और उसे दिल से प्यार करेंगे. फिर सम्राट ने मीनार की खिड़की के आगे झुककर मोटी रस्सी को पकड़ा. उसे खींचकर वो मीनार में लाये और वहां उन्होंने पतंग की डोर से रस्सी को अलग किया. फिर उन्होंने पतंग को छोड़ दिया और यह कहा : “अपने घर आसमान में घूमो, प्रिय पतंग.” फिर पतंग ने स्वर्ग की ओर अपना रुख किया.



उसके बाद सम्राट ने रस्सी को, मोटी लोहे की सलाख से बाँधा.
रस्सी का दूसरा सिरा छुटकी राजकुमारी अपने छोटे हाथों में पकड़े थी.

फिर सम्राट खिड़की की चौखट पर चढ़े और सलाख के नीचे से
निकले. उन्होंने भगवान का शुक्रिया अदा किया और फिर रस्सी को
कसकर पकड़कर नीचे की ओर फिसले. सम्राट का चोगा हवा से भर
गया और वो भी चमकीली पतंग की तरह हवा में फड़फड़ाने लगा.





जब सम्राट के पैर ज़मीन को छुए तो सबसे पहले उन्होंने घुटनों के बल लेटकर अपनी बेटी का अभिवादन किया. उन्होंने ज़मीन को अपने होंटों से चूमकर उसे भी प्रणाम किया. फिर उन्होंने अपनी बेटी को गले लगाया. छुटकी राजकुमारी अपने पिता की बाहों में बिल्कुल खो गई.







फिर सम्राट ने बेटी के सिर पर हाथ रखकर कहा,
“चलो वफादार बेटी, चलो मेरे साथ घर चलो.” उसके बाद
उन्होंने छुटकी राजकुमारी को अपने कंधों पर उठाया और
उसे लेकर महल की ओर वापिस चले.





महल में लोगों ने सम्राट का ज़ोरदार स्वागत किया. आम जनता उन क्रूर बागियों के शासन से परेशान हो गई थी. पर उन दुष्ट लोगों के खिलाफ आवाज़ उठाने की उनमें हिम्मत नहीं थी. पर अब तो खुद सम्राट, उनके सामने मौजूद थे. उससे उनका डर रफूचक्कर हो गया! सम्राट के आदेश के बाद लोगों ने उन दुष्ट लोगों को तुरंत जेल में डाल दिया.

बाकी बेटे-बेटियों ने सम्राट की वापसी की खबर सुनने के बाद अपना रोना-चिल्लाना बंद किया. वे भी पिता के स्वागत के लिए अपने राज्य में लौटे. वापिस आने पर उन्हें तब बहुत ताज्जुब हुआ जब उन्होंने छुटकी राजकुमारी को सम्राट के पास एक छोटी राजगद्दी पर बैठे हुए देखा.





अपनी अंतिम साँस तक सम्राट ने छुटकी राजकुमारी के साथ मिलकर शासन किया. छुटकी राजकुमारी को पिता के प्रेम के अलावा और किसी चीज़ की तलब नहीं थी. उसके बाद से सम्राट ने हर इंसान की इज्जत की – चाहें वो छोटा हो या बड़ा. ऐसा कहा जाता है कि सम्राट की मृत्यु के बाद भी छुटकी राजकुमारी ने हवा की कोमलता और वफ़ादारी से राजपाट चलाया.

